© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

शांति शिक्षा के समक्ष जटिलताएँ

अजीत कुमार यादव
शोधार्थी
आर0बी0एस0 कालेज, आगरा

सारांश–

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली एक प्रक्रिया है। यह व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास में सहायक होती है। शिक्षा का प्रमुख उद्‌देश्य सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। इसलिए शिक्षा का उपयोग सामाजिक विकास के साधन के रूप में किया जाता है। यह राष्ट्रीय एकता एवं विकास को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाती है। शिक्षित व्यक्ति से सर्वदा यह अपेक्षा की जाती है कि वह समाज में शांति दूत बन कर कार्य करे और समाज की संस्कृति सभ्यता का संरक्षण, पोषण एवं उसका प्रसार करें। परन्तु वर्तमान परिदृश्य में शिक्षित व्यक्ति भी समाज विरोधी गतिविधियों में संलिप्त है जिससे शिक्षा के समक्ष कई ऐसी समस्यायें हैं जो कहीं न कहीं व्यक्ति के विचारों को खत्म करने का कार्य करती है और उसे पथभ्रमित कर देती है। आज शांति शिक्षा के मार्ग में ऐसे बहुत सी जटिलताएँ हैं जैसे अलगाववाद, मानवाधिकार हनन, धार्मिक कट्‌टरता, आतंकवाद, जातिवाद जिसके प्रभाव में आकर सभ्य व्यक्ति भी घृणित व गैर कानूनी कार्य करने पर मजबूर हो जाता है। जिससे शिक्षा का प्रभाव शून्य हो जाता है। प्रस्तुत लेख में शांति शिक्षा के मार्ग में आने वाली प्रमुख जटिलताओं का विस्तार से वर्णन किया जा रहा है जो शांति शिक्षा के समक्ष

मुख्य शब्द– शांति शिक्षा

प्रस्तावना–

शिक्षा मनुष्य के जीवन में एक धारा के समान है। सभ्यता संस्कृति एवं ज्ञान की इस धारा में प्रगति बनी रहे उसमें अवरोध न आये इसलिए समय–समय पर मानव समाज को ऐसे प्रयास करने होते हैं जिससे यह धारा वेगशील बनी रहे। इसी भगीरथ प्रयास में शांति शिक्षा का नाम आता है। जो वर्तमान परिवेश में अति आवश्यक हो गयी है। क्योंकि इस गतिशीलता में समाज व राष्ट्र को भ्रष्टाचार, आतंकवाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद जैसे तत्वों ने बाधित किया है। अतः समाज की अविछिन्न, कल–कल और निर्वाध रूप से प्रवाहशील बने रहने में हिंसा, कपट, छल, राग, द्वेष जैसे विभंजनकारी तत्वों को समाप्त करना होगा और शांति शिक्षा की स्थापना करनी होगी परन्तु इस रास्ते में कई प्रकार की अन्य बाधाएँ भी शामिल है। जिन्हें मुख्यतः दो भागों में देखा जा सकता है।

- ❖ शांति शिक्षा में आने वाली प्रमुख जटिलताएँ
- ❖ शांति शिक्षा में आने वाली सामान्य जटिलताएँ

शांति शिक्षा मं आने वाली प्रमुख जटिलताएँ–

साम्प्रदायिकता–

साम्प्रदायिकता की बढ़ती प्रवृत्ति और उसके साथ जुड़ी हिंसा धार्मिक अल्पसंख्यकों और नृजातीय समूहों में असुरक्षा की भावना जागृत करती है। कोई भी राष्ट्र अपनी जनसंख्या के किसी भी अंग को आतंक, सन्देह एवं असुरक्षा का शिकार बनने नहीं दे सकता इसलिए देश की शान्ति एवं एकता की क्षति को रोकने के लिए साम्प्रदायिकता की समस्या का विश्लेषण करना अति आवश्यक है। वास्तव में साम्प्रदायिकता एक विचारधारा है जो बताती है कि समाज धार्मिक समुदायों में विभाजित है जिनके हित एक दूसरे से भिन्न है और कभी कभी उनमें पारस्परिक उग्र विरोध भी होता है। साम्प्रदायिकता मुख्य रूप से धर्म की अपेक्षा राजनीति से ज्यादा अभिप्रेरित होती है। और धर्म के आधार पर लोगों को विभाजित करने का कार्य सिर्फ निजी स्वार्थों की पूर्ति करने वाले असमाजिक एवं निकृष्ट कोटि के लोग ही करते हैं। ऐसी परिस्थिति से उबरने में स्वयं को इतना सुदृढ़ एवं विवेकशील बनाना होगा कि उचित अनुचित,

नैतिक–अनैतिक, तार्किक–अतार्किक आदि के बीच अन्तर को स्पष्ट पहचान की जा सके जिससे शांति सद्भाव एवं राष्ट्रीय एकता बरकरार रह सके।

जातिवाद–

जाति आधारित व्यवस्था ने एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से भिन्न बना दिया है यूं तो भारत में प्राचीन काल में कर्म आधारित जाति व्यवस्था को अत्यन्त उपयोगी सामाजिक व्यवस्था के रूप में देखा लेकिन समय के साथ–साथ कर्म आधारित जाति व्यवस्था जन्म आधारित सामाजिक व्यवस्था की संकीर्ण रूढ़ियों में जकड़ गई। और फिर सामाजिक बिखण्डन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी और भारतीय समाज कई ऐसे जातिगत समूहों में विभक्त हो गया जो आज भी इसका दंश झेल रहा है। आजकल जातियाँ स्वयं को राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक उद्देश्यों के लिए संगठित होने का प्रयत्न करती है। और चुनाव जातिगत आधार पर लड़े जाते हैं, इन्हीं चुनावों में व्यापक हिंसा भी होती है और मानवीय मूल्यों को तार–तार किया जाता है। अतः जातिवादी व्यवस्था शांति शिक्षा के लिये किये जाने वाले सभी प्रयासों को विफल बना देती है।

आतंकवाद–

आतंकवाद एक प्रकार के महौल को कहा जाता है। इसे एक प्रकार के हिंसात्मक गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जाता है जो कि अपने आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं विचारात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए गैर सैनिक अर्थात नागरिकों की सुरक्षा को भी निशाना बनाते है। वस्तुतः आज के वर्तमान युग में कोई भी राष्ट्र इससे अछूता नहीं है। और चारों तरफ भय, अहिंसा के इस माहौल को केवल शांति माध्यमों की तलाश करके ही खत्म किया जा सकता है।

भ्रष्टाचार–

भ्रष्टाचार से तात्पर्य अनुचित व्यवहार एवं चाल चलन। विस्तृत अर्थों में इसका तात्पर्य व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले ऐसे अनुचित कार्य से है, जिसे वह अपने पद का लाभ उठाते हुये आर्थिक या अन्य लाभों को प्राप्त करने के लिए स्वार्थपूर्ण ढंग से कार्य करता है। रिश्वत की लेन–देन, मुनाफाखोरी अनुचित ढंग से धन संग्रह सरकारी पदों का दुरूपयोग आदि भ्रष्टाचार के ऐसे स्वरूप है जो सर्वत्र विद्यमान है जो कहीं न कहीं समाज में विक्षोभ उत्पन्न करते है। और अनैतिक अवसरवाद को बढ़ावा देते हैं और शांति को प्रभावित करते हैं।

युवा विक्षोभ–

युवा असन्तोष का परिणाम युवा उत्तेजनापूर्ण आन्दोलनों के रूप में सामने आता है। वे कुछ युवा जो घोर अन्याय से उत्पीड़ित महसूस करते हैं या जो विद्यमान ढाँचों एवं अवसरों से नाराज होते हैं, सामूहिक रूप से सत्तारूढ़ व्यक्तियों पर युवा उत्तेजनापूर्ण आन्दोलन के रूप में कुछ परिवर्तन लाने के लिए दबाव डालते हैं और प्रशासनिक एवं सामाजिक ढांचे पर अपनी कुण्ठा निकालते हैं जिसके कारण शांति भंग होती है और सामाजिक समायोजन छिन्न–भिन्न होता है।

धार्मिक संकीर्णता–

धर्म को संकीर्ण अर्थों में समझ कर आज बहुत लोग इसकी गलत व्याख्या करते हैं जो समाज को भी प्रभावित करती है। विद्यालयों में बहुत से धर्मों के बच्चे पढने आते हैं और उन्हें यदि वे धार्मिक रूप से संकीर्ण होंगे तो उनहें एकता के धागे में पिरोया नहीं जा सकता और ऐसी स्थिति में वह राष्ट्र समाज के लिए घातक सिद्ध हो सकते है। धार्मिक संकीर्णता शिक्षा के मार्ग को बाधित कर समाज को अस्थिर बना देती है और शांति स्थापित नहीं होने देती है।

क्षेत्रवाद–

क्षेत्रवाद से तात्पर्य किसी क्षेत्र के लोगों की उस भावना एवं प्रयत्नों से है जिनके द्वारा वे अपने क्षेत्र–विशेष की आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक आदि शक्तियों में वृद्धि करना चाहते हैं और आगे चलकर यह संकीर्ण रूप ले लेती है तब क्षेत्र बनाम राष्ट्र की भावना आ जाती है। क्षेत्रीयता एवं प्रान्तीयता की भावना जब–जब राष्ट्रीय हितों से संघर्ष

करती है, तब–तब देश की एकता एवं अखण्डता के लिए खतरा उत्पन्न होता है। पिछले एक दशक से देश में कई ऐसे प्रकरण आये हैं जो विखण्डन की तरफ पथिक रहे है। क्षेत्रीयता, भाषावाद को जन्म देती है और एकरूपता और अखण्डता को खत्म कर देती है।

भाषावाद–

क्षेत्रवाद के गर्भ में ही भाषावाद जैसे विचार भी पलते है। भाषागत विभिन्नता भारत की पहचान है यहां भौगोलिक विभिन्नता एवं विविधता इसे बहुभाषी देश बनाती है परन्तु भारत आज भी भाषागत असंतुलन से जूझ रहा है। क्योंकि यहां भाषायी श्रेष्ठा की जंग सर्वथा रही है और भाषायी आधार पर राज्यों का गठन इसे और भी बलवती करता है। भाषायी विविधता को सकारात्मक से देखे तो यह समाज को विविध साहित्य, लोकगीत नृत्य, अन्य प्रदान करती है। और हमारे संविधान द्वारा भी भाषाओं को संरक्षण प्राप्त है। परन्तु कुछ स्वार्थी तत्वों ने इसे राजनीति का आधार बना कर असन्तुलन पैदा किया और नकारात्मक विचारों को प्रेषित किया है जिससे शांति की स्थापना में बाधा आयी है।

बेरोजगारी–

बेरोजगारी अथवा बेकारी का अर्थ होता है कार्य सक्षम होने के बावजूद व्यक्ति आजीविका के लिए कोई काम नहीं मिलना एक बेरोजगार व्यक्ति के सामने रोजी–रोटी का संकट होता है। बेरोजगारी की वजह से वह मानसिक रूप से परेशान रहता है। ऐसे में एक बेरोजगार मनुष्य का बुरे सामाजिक कार्यों में संलग्न हो जाना सामान्य सी बात होती है जिसके कारण स्थापना की अवधारणा में क्षीणता आती है।

शोषण–

धनिक वर्ग द्वारा गरीब वर्ग का शोषण एक समस्या है। कुछ लोग बेरोजगारों का रोजगार के नाम पर शोषण करते है। और उनके कार्यों का सही पारितोषिक नहीं देते जिससे उनमें कुण्ठा आती है और वह गलत कार्यों में संलिप्त हो जाते है।

जनसंख्या वृद्धि–

जनसंख्या वृद्धि हमारे समाज की कई बुराईयों की जड़ है। बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में रोजगार सृजन न होने के कारण बेरोजगारी और गरीबी में वृद्धि होती है जो व्यापक जनअसंतोष कारण बनती है। जो अनेकों विसंगतियों को जन्म देती है। जिससे शांति और सौहार्द का लोप होता है।

अशिक्षा–

अशिक्षा एक बहुत ही बड़ी समस्या है। आजादी के इतने वर्षों बाद भी हम अभी तक सभी को शिक्षा सुलभ नहीं करा पाये है। जिसके कारण आर्थिक एवं सामाजिक विकास का पहिया रूक सा गया है। यदि हमें अपने मानवीय जनसंख्या को संसाधन रूप में उपयोग करना है तो उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षित देनी होगी जिससे वह आगे बढ़ सके और राष्ट्र को भी आगे बढ़ा सकें।

शांति शिक्षा में आने वाली सामान्य जटिलताएँ–

शिक्षा का व्यवसायीकरण–

शिक्षा के व्यवसायीकरण से भारत में निजी शिक्षण संस्थाओं की बाढ़–सी आ गई है इन लाखों की संख्या में निजी शिक्षण संस्थाओं में से नब्बे प्रतिशत संस्थानों में गुणवत्ता युक्त शिक्षा का अभाव होता है और दिनों–दिन फर्जी शिक्षण संस्थाओं की संख्या भी बढ़ती जा रही है जिसमें छात्रों के साथ फर्जीवाड़ा होता है जिसमे लाखों छात्रों का निजी शिक्षण संस्थानों द्वारा शोषण किया जाता है और छात्रों का भविश्य अंधकारमय हो जाता है।

स्वार्थवादिता–

स्वार्थवादिता मानव का एक ऐसा पक्ष है जिसमें वह सम्पूर्ण संसाधनों को स्वयं के उपयोग–उपभोग तक ही सीमित रखना चाहता है। इसमें सबसे बड़ी अवधारणा मैं, मेरा, मेरे लिये, मुझ तक सीमित है। इससे वर्तमान समय में

शिक्षक, छात्र, माता–पिता भी अछूते नहीं है। अतः इसी संकल्पना को बदलना होगा और नवीन आदर्शों (हम, हमारा, हम सब, हम सबके लिए) का विकास करना होगा तभी शांति एवं सद्भाव स्थापित हो सकता है।

आदर्श मूल्यों की कमी–

वर्तमान समय में शिक्षा अपने आदर्शों को खोती जा रही जहां पहले शिक्षा का उद्देश्य मानवीय पक्षों को उजागर करना था और मूल्यों का विकास करना था परन्तु आज के समय में केवल रोजगार प्राप्त करना रह गया है, विद्यार्थियों में रोजगार प्राप्त न होने पर कुण्ठा आने लगती है। जिससे वह समाज विपरीत व्यवहार करने लगता है और अशांति की तरफ अग्रसर हो जाता है।

नीतिपरकता का आभाव–

बदलते परिदृश्य में छात्रों में नतिकता एवं नीतिपरकता का अभाव है जिससे उनमें उदण्डता, उच्चश्रृंखलता अनुशासनहीनता आयी है जो शांति शिक्षा को अप्रभावी बनाती है।

शिक्षा के एकीकृत स्वरूप का अभाव–

भाषायी विभिन्नता, क्षेत्रीय विषमता एवं सांस्कृतिक वैषम्य ने भारत में हर राज्य में शिक्षा के एकीकृत स्वरूप को कमजोर किया है। जिससे शांति शिक्षा के लिये समग्र रूपरेखा तैयार नहीं हो पाती जिससे अशांति की स्थिति बनी रहती है। अतः वर्तमान में शिक्षा का सार्वभौमिक स्वरूप ही समाज को प्रगति पथ पर आगे ले जा सकता है। जिसमें सबको समान एवं अनिवार्य शिक्षा मिलनी चाहिये क्योंकि अशिक्षित व्यक्ति समाज में कई प्रकार की अशांति को उत्पन्न करने के लिए जिम्मेदार है।

शांति शिक्षा के मार्ग में आने वाली जटिलताओं को खत्म करने के उपाय–

शांति शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं की कुछ महत्वपूर्ण प्रयासों के माध्यम से दूर किया जा सकता है जो निम्नलिखित है–

- **पाठ्यक्रमों में बदलाव लाकर** विश्व शांति एवं सद्भाव नामक विषय को अनिवार्य बनाया जाये, विभिन्न राज्यों एवं राष्ट्रों में रहने वाले लोगों के रहन–सहन, खान–पान समानताओं एवं असमानताओं तथा इससे संबन्धित विषयों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाये।
- **पाठ्यसहयोगी क्रियाओं के द्वारा–** अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल–कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन, साहित्यिक, संगोष्ठियों, महान व्यक्तियों एवं विचारकों के व्याख्यानों का आयोजन एवं छात्रों को पत्र–मित्र बनाने के लिए प्रोत्साहन देना होगा।
- **सामाजिक बुराईयो को दूर करके–** समाज में व्याप्त जातिप्रथा, धार्मिक संकीर्णता क्षेत्रवाद, शोषण, अंधविश्वास को समाप्त करके ही शांति की स्थापना की जा सकती है।
- **शैक्षिक मूल्यों में बदलाव लाकर–** शैक्षिक मूल्यों, (अहिंसा, दया, क्षमा, शील, ज्ञान, सहयोग) को समाज में विस्तार करना होगा और शिक्षा को ज्ञान से जोड़ना जिससे मानसिक एवं सामाजिक शांति उपज सके।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मनुष्य के जीवन का लक्ष्य शांति प्राप्त करना होना चाहिये विश्व में जहां कहीं भी युद्ध चल रहे हैं या युद्ध हुये इन सबने कहीं न कहीं अशांती व असुरक्षा का भाव पैदा किया है। अतः वर्तमान समय में शांति शिक्षा कार्यक्रमों को विस्तृत रूप से पाठ्यक्रमों में अंगीकृत करने की आवश्कता है और शांति शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं को सामुहिक सहभागिता, सामाजिक सहयोग, सहअस्तीत्व के भाव के व्यवस्थित क्रियान्वयन के द्वारा ही दूर किया जा सकता है और शांति एवं सद्भाव के वातावरण को विकसित करने के लिये नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों की शिक्षा को प्रारम्भिक स्तर से उच्च स्तर तक दिये जाने की आवश्यकता है। जिससे हमारे भविष्य निर्माणकर्ता योग्य एवं शांतिदूत बन सके और शांतिपरक मूल्यों को समाज में स्थापित कर सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1ण अनेजा (1986), शांतिपर्व में नैतिक मूल्य, दिल्ली : कादम्बरी प्रकाशन

2ण वालिया (2011), सरकारी एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों में शांति शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

3ण शर्मा, योगेन्द्र कुमार एवं शर्मा, मधुलिका (2008), शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स

4ण श्रीवास्तव, ए0आर0एन0, (2011) भारतीय समाज, इलाहाबाद : शेखर प्रकाशन

5. www.hindikiduniya.com.
6. www.hindikiduniya.com>speech
7. www.unicef org.
8. www.peace.org.>academic>peace
9. www.peace.lit.no